इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय
Indira Gandhi National Tribal University
अमरकंटक (म.प्र.) || Amarkantak (MP)

प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी
कुलपति

Ref. NO. IGNTU/2020/VC/07

Date: 12/04/2020

संदेश

प्रिय शिक्षकगण,

आज की परिस्थिति में आप सभी से बहुधा नहीं मिल पाने का कष्ट है। आप मां सरस्वती की संतान हैं, मेधा शक्ति के धनी। आप समाज के पथ–प्रदर्शक हैं, राष्ट्रोन्नति के कारक और कारण हैं तथा मानवता के संरक्षक और संवर्धक हैं। हम, आप ही नहीं, संपूर्ण मानवता आज कोविड–19 की महामारी जनित आपदा का सामना कर रही है। मानव सभ्यता अपने को संरक्षित करने के लिए निरंतर संघर्षरत् है ऐसा प्रतीत हो रहा है, मानो इस महामारी के प्रकोप ने मनुष्य को स्तब्ध कर दिया है। आप शिक्षक हैं, और यह जानते हैं कि सत्य, निष्ठा और साहस से ही इस जड़ता को तोड़ पाना संभव है। धर्माचार भी ऐसे संकटापन्न काल में औषधि का काम करता है। आपको यह बताना भी आवश्यक मानता हूँ कि भारतीय जीवन–धारा में इस प्रकार के उद्वेलन कई बार पहले भी हुए हैं और हमारी वैचारिक और व्यावहारिक शक्ति ने उनपर विजय प्राप्त कर जीवन गति की निरंतरता को बनाये रखा है।

शिक्षक मार्गदर्शक भी होता है और मार्ग को प्रकाशित करने वाली दीपशिखा भी। इन दोनों भूमिकाओं का आप सफलतापूर्वक निर्वहन करते रहे हैं। इसे उत्कृष्टतम भाव से निभाने का समय आज आपके समक्ष उपस्थित है। आप शास्त्र शक्ति के संवाहक हैं। मुझे इस बात की अतिशय प्रसन्नता है कि आप सभी अध्यापन के ऑनलाईन उपक्रम से अपने विद्यार्थियों को निरंतर विषयगत, व्यवहारगत और नीतिगत ज्ञान दे रहे हैं। मुझे विश्वास है कि आप अपने विद्यार्थियों और उनके परिवार के संपर्क में हैं और उन्हें अपने ज्ञान और सद्विचारों से पुष्ट कर रहे हैं, संतृप्त कर रहे हैं। अपने इष्ट–मित्रों और शुभेच्छुओं को भी राष्ट्रीय दायित्व के निर्वहन हेतु प्रेरित करें, संकल्पित करें।

आज पांडित्य के साथ ही साथ विवेक और आत्मबल की विशेष आवश्यकता है। मानवता संकट में है। निश्चय ही मनुष्य की आत्मिक शक्ति और चेतना ही इस संकट के निवारण में सफल होगी। इसीलिए आत्मबल, तेजबल और बुद्धिबल के साथ इस समय खड़े रहना है। हम इस अवधि में कुछ ऐसा करें जो भविष्य में मानव–सेवा का उदाहरण बन सके। आप चिकित्सकों, पैरा–मेडिकल स्टॉफ के सदस्यों, सुरक्षाकर्मियों एवं सफाईकर्मियों जो हम सबकी सुरक्षा और सुविधा के लिए अपना हर प्रकार का उत्सर्ग करने के लिए तत्पर हैं, के प्रति सम्मान और स्नेह का भाव बनाए रखना अभीष्ट है। आप ऐसा कर रहे होंगे, यह मेरा विश्वास है।

हमारा विश्वविद्यालय वन एवं अरण्य क्षेत्र में स्थित है। यह क्षेत्र वनस्पतियों और वनौषधियों से समृद्ध है। सामान्य विषाणुओं और कीटाणुओं की प्रतिरोधी क्षमता से युक्त है, विभिन्न प्रकार के विकारों का शमन करने का इनमें गुण है। विज्ञान के अध्यापकगण मिलजुल कर इन पर गहन शोध करें और कुछ उच्च स्तरीय पोषक तत्वों एवं जीवन–रक्षक औषधियों का आविष्कार करके विश्वविद्यालय को वास्तव में ज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी होने का गौरव प्रदान करें। हमारे कई अध्यापक इस दिशा में काम कर भी रहे हैं। अब इस कार्य को आंदोलन का रूप देने की आवश्यकता है।

आपको पता है कि आदिवासी समुदायों के पास परंपरागत ज्ञान और कौशल की समृद्ध परंपरा और धरोहरें सुरक्षित हैं। इन पर भी मानविकी और सामाजिक विज्ञान के सम्बद्ध अध्यापकों द्वारा शोध कार्य किया जा रहा है। इसपर और भी गम्भीर शोध करने की आवश्यकता है। आशा है इस लॉकडाउन की अवधि में हमारे शिक्षणगण कुछ महत्वपूर्ण शोध–पत्र अवश्य तैयार कर लिए होंगे और इस प्रकिया में सन्नद्ध होंगे।

आप जहाँ कहीं भी हैं– परिसर में या उसके बाहर, अपने परिवार का पूरा ध्यान रखिए, विशेषकर छोटे बच्चों और बुजुर्गों का। सकारात्मक सोच को प्रसारित कीजिए। आप अध्यापक हैं, अतः आपका सामाजिक दायित्व और भी बढ़ जाता है। अपने अनुभव और ज्ञान को राष्ट्रहित के निमित्त उपयोग और अर्पित करते रहने का आप शुभ संकल्प लें, मेरा आपसे यह विनम्र अनुरोध है।

अपना ध्यान रखिए, अपनों का ध्यान रखिए, सबका ध्यान रखिए। सामाजिक दूरी बनाये रखने के निर्देश का आप पालन कर रहे होंगे। सरकार के दिशा–निर्देश का पालन स्वयं भी करें, औरों को भी ऐसा करने को प्रेरित करें। आपकी यश वृद्धि हो और आपका निरंतर मंगल हो।

प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी

Scanned by CamScanner